संगीत निर्देशन के क्षेत्र में तकनीकी का उपयोग

डॉ0 शम्पा चौधरी

एसो0 प्रोफे0,संगीत (गायन) विभाग,
वी0एम0एल0जी0 कालिज, गाजियाबाद।
shampachaudhary1410@gmail.com

शोधपत्र का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:

डॉ0 शम्पा चौधरी ,
"संगीत निर्देशन के क्षेत्र में तकनीकी का उपयोगें"

Artistic Narration 2017,
Vol. VIII, No.1, pp. 134-137
http://anubooks.com/
?page_id=2325

सारांश

लोकगीत 'लोक तथा गीत दो शब्दों के संयोग से बना है। जिसका अर्थ है लोक के गीत मानव हृदय का भावविलास जब लयात्मक आरोह–अवरोह में भाषाबद्ध होकर प्रवाहित होने लगता है तो वह गीत बन जाता है। लोकगीत विराट मानव जीवन का मुस्कुराता हुआ नैसर्गिक प्रसून है जो जनमानस का मनोरंजन करता है। लोकगीत उतने ही प्राचीन है जितना मानव का जीवन। लोकगीतों का उद्‌गम शहर की चकाचौंध में नहीं अपितु गांव की प्राकृतिक सम्पदा की पृष्ठभूमि में होता है। लोकगीतों के निर्माण की प्रक्रिया में सदैव समुदाय से अधिक समुदाय का व्यक्ति सक्रिय रहा है जिसका न कोई निर्माता है न स्वरसंघाता। वह जैसे मानव समुदाय में सहज की स्वयं उद्धरित हो उठा है।

संगीत निर्देशन, कला की आत्मानुभूति का प्रर्दशन है। यह नैसर्गिक क्रिया है तथा इसकी कोई सीमा नहीं है। यही कारण है कि यह यथा देश, काल, परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित तथा परिमार्जित होती रहती है। बोलती फिल्मों के आगमन से फिल्मों में गीत–संगीत का प्रचार बढ़ा।उन दिनों सुरेन्द्र, के0 एल0 सहगल, रामानंद पंडित, गौहरबाई, जद्दनबाई, राजकुमारी आदि ऐसे कलाकार थे जो अभिनय के साथ–साथ गाना भी गा सकते थे। परन्तु कभी–कभी किसी आकर्षक व्यक्तित्त्व अभिनय में कुशल पात्र को गाने की जानकारी न होने के कारण फिल्मों में प्रवेश नहीं मिल पाता था। जिस कारण फिल्म जगत में पार्श्वगायन की आवश्यकता को महसूस किया गया। "1934 में नितिन बोस के निर्देशन में एक फिल्म बन रही थी भाग्यचक्र। इस फिल्म के कलाकार प्रेम अदीब और बेगमदपारा थे। फिल्म की कहानी में नायिका को एक शास्त्रीय गीत गाना था और बेगम पारा शास्त्रीय गायन नहीं जानती थीं। निर्देशक के काफी प्रयास के बाद भी वह गीत नहीं गा सकी। एक दिन निद्रेशक नितिन बोस गायिका पी. हीरालक्ष्मी का गाना सुन रहे थे। उसी समय उनके दिमाग में उनसे पार्श्वगायन कराने की बात आई। अब कैमरे के सामने बेगमपारा मुँह हिला रहीं थीं और परदे के पीछे पी. हीरालक्ष्मी गा रही थीं। यहीं से प्रत्यक्षगायन पार्श्वगायन की ओर उन्मुख हुआ और धीरे–धीरे पार्श्वगायन की कला स्वतंत्र रूप से विकसित हुई।"

संगीत निर्देशन फिल्म की सफलता का पहला पायदान है। "फिल्म एक लोकतंत्रीय कला है, यह किसी लेखक, मूर्तिकार, चित्रकार, संगीतकार, गीतकार तथा कलाकार की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति नहीं है बल्कि इन सभी की कलाओं का सामूहिक योगदान है।"फिल्म जगत में प्रयोग किये जानेवाले गीत–संगीत की निर्माण प्रक्रिया में गीतकार, संगीतकार, विभिन्न सहायक वादक कलाकार , रिकॉर्डिस्ट का सम्मिलित योगदान रहता है। तैयार गीत व संगीत को कहाँ, कैसे प्रयोग करना है यह निर्देशक तय करता है।

मानव जीवन तकनीकी विकास से सदैव अभिप्रेरित रहता है। मनुष्य भौतिकवादी तथा महत्वाकांक्षी होता है। जिससे वह अपनी अभिलाषाओं की पूर्ति हेतु निरन्तर आविष्कार करता है। संगीत निर्देशन में भी तकनीकी आविष्कारों का प्रभाव देखा जा सकता है। यही कारण है कि आज फिल्म के गाने व उसका पार्श्व संगीत (बैकग्राउन्ड म्यूज़िक) रिकॉर्ड करने के लिए पहले की अपेक्षा काफी कम मेहनत व समय लगता है। एक समय था जब अभिनेता कलाकार के करीब साजिन्दे व गायक कलाकार को बैठा कर गाना फिल्माया जाता था। धीरे–धीरे तकनीकि विकास से स्टूडियो में सभी साजिन्दे गायक कलाकार आदि मिलकर गाने को रिकॉर्ड करने लगे। आज तो प्रायः सभी कलाकार अपना–अपना पीस (संगीत का टुकड़ा) बजाकर रिकॉर्ड कर देते है तथा बाद में संगीत निर्देशन व तकनीशियन मिलकर मशीनों के माध्यम से मनचाहे रूप में तैयार कर लेते हैं।

आज संगीत जगत में टेक्नॉलजी का प्रयोग इतना अधिक हो गया है कि वास्तविक संगीत का धरातल धूमिल सा हो रहा है। माइक्रोफोन कम्पनियों ने ऑटोट्यूनर जैसे उपकरणों से बेसुरे को भी सुरीला करने की कोशिश की है। संगीत निर्देशक जतिन ने सिंगिंग रिएलटी शो सा रे गा मा में ऐसे यंत्र की चर्चा की थी। बहुत से बाजार में आज गायक ऐसी तकनीकियों का प्रयोग कर के अपनी कला का प्रदर्शन कर रहें है। तकनीकि उपकरणों से एक ओर जहाँ हमें बहुत सारे इफेक्ट को प्रयोग करना आसान हुआ वहीं कुछ लोग उसका फायदा भी ले रहे हैं। तकनीकि निरंतर अपडेट होने वाली प्रक्रिया है, यही कारण है कि संगीत निर्देशन में जैसे–जैसे तकनीकि का विकास हुआ तो कई नवीन प्रयोग भी देखने को मिले

हैं। संगीत निर्देशकों ने समय–समय पर होने वाले तकनीकी प्रयोगों से अपनी कल्पनाशीलता को ऊँचा उठाया है। "1934 में फिल्म भाग्यचक्र से सबसे पहले पार्श्वगायन शुरू हुआ और संगीत निर्देशन में सर्वप्रथम ऑर्केस्ट्रा 1934 मे ही बनी फिल्म पूरनभगत, जिसके संगीत निर्देशक आर0 सी0 बोराल थे"। संगीत निर्देशन में ऑर्केस्ट्राइजेशन इस बात का प्रमाण है कि उस समय में उपलब्ध तकनीकि का उपयोग रहता है। इस दिशा में काम करने वाले निर्देशकों में अनिल विश्वास, गुलाम हैदर, विशेषकर ऑर्केस्ट्राइजेशन का क्षेत्र में राजकपूर ने क्रांति ला दी। पृष्ठभूमि संगीत में तकनीकी द्वारा भावनाओं को अभिव्यक्त किया गया, संगीत निर्देशक जोडी शंकर–जयकिशन ने भरपूर उस के सभी देशी–विदेशी साजों का प्रयोग किया। आगे सी0 रामचंद्र, लक्ष्मीकांत–प्यारेलाल, मदनमोहन के नाम उल्लेखनीय है। अस्सी के दशक में पॉप, डिस्को, रॉक, ब्रेकडांस आदि का प्रभाव हमारी भारतीय संगीत शैली पर हुआ जिसमें तमाम विदेशी अभियांत्रिक साजों का प्रयोग हुआ जो आधुनिक तकनीकी से ओतप्रोत रहे हैं। तकनीकपूर्ण संगीत देने में आर0 डी0 बर्मन को हमेशा याद किया जाता रहेगा। वर्तमान में ए0 आर0 रहमान ने इस क्षेत्र में उच्च कोटि की उपलब्धि अर्जित की है। उनके संगीत में आधुनिक तकनीकी को बाखूबी प्रयोग किया जाता रहा है। यही कारण है कि उन्होने ऑस्कर एवार्ड जीतकर भारतीय संगीत की प्रयोगधर्मिता को प्रतिस्थापित किया है।

अब हम संगीत के क्षेत्र में हुए तकनीकी विस्तार बात करेंगे, पहले के दौर में सांगीतिक उपकरणों में तान पुरा, सितार, हारमोनियम, बांसुरी, तबला, ढ़ोलक, नगाड़ा, ताशा आदि थे किन्तु आज संगीत के अभियांत्रिक उपकरण बहुत से आविष्कृत हो चुके हैं जैसे– सिन्थिसाइजर, पैड, हैन्डसोनिक आदि जिनमें असंख्य साज़ों का समावेश किया गया है। जिससे संगीत का एक विशाल स्वरूप निकल कर बाहर आता है। केवल उसमें संगीत निर्देशक की कल्पनाशीलता ही है कि वह कितना विस्तार कर सकता है।

अतः यह निश्चय सत्य है कि संगीत निर्देशन के क्षेत्र में तकनीकिकरण का प्रभाव स्पष्टतः परिलक्षित होता है। सिन्थेसाइजर संगीत के क्षेत्र की ऐसी उपलब्धि है इस एक यंत्र में अगणित संभावनाएँ है, एक साज में असंख्य साजों का मिश्रण किया गया है। संगीत निर्देशक इसकी मदद से मनःसंवेदनाओं को व्यक्त करने पर काम करते है। बहुत से ऐसे साउंड इफेक्ट जो दृश्य को प्रभावशाली बनाते है। इसके द्वारा संभव हो पाता है। ऐसे ही अन्य उपकरण जैसे मेट्रोनोम, ऑक्जीलोग्राफ, श्रुतिबॉक्स, सुनादमाला, तालमाला आदि है जो संगीत की तकनीकी विकास के उदाहरण प्रस्तुत करते है।

सांगीतिक उपकरणों के साथ–साथ उनको रिकॉर्ड करने के लिए भी तमाम अभियांत्रिक उपकरणों का अविष्कार हुआ है। जैसे– ग्रामोफोन, फोनोग्राफ, टेपरिकॉर्डर, कन्डेन्सर माइक, मिक्सर, आदि । आज तो ऐंड्रॉयड फोन में सांगीतिक एप भी उपलब्ध है जिनमें सीखने और प्रयोग करने की अपार संभावनाएँ है। यह तकनीकी विकास ही है कि आज हम संगीत संरक्षित व संवर्धित कर पा रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1 – शर्मा, डॉ0 इन्दु, भारतीय फिल्म संगीत में ताल समन्वय, कनिष्का पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली
2 – "यमन", अशोक कुमार, संगीत रत्नावली, प्रकाशक, आभिषेक पब्लिकेशन्स, चण्डीगढ़, प्रथम संस्करण 2008

3 – चौधरी, सुभाष रानी, संगीत के प्रमुख शास्त्रीय सिद्धान्त, प्रकाशक, कनिष्का पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली सं0 2002

4 – श्रीवास्तव, गिरीशचन्द्र, ताल–परिचय भाग–3, प्रकाशक, रूबी प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम सं0

5 – मराठे, श्री भालचंद्र राव, ताल वाद्य शास्त्र, प्रकाशक, शर्मा पुस्तक भवन, तृतीय सं0